



## उच्च शिक्षा में शैक्षणिक सत्य निष्ठा एवं नैतिकता

वैष्णवी शुक्ला

ए.पी.एस. वि.वि., रीवा म.प्र., भारत

Communicated : 22.06.2026

Revision : 25.07.2026  
Accepted : 15.08.2026

Published: 30.09.2026

### सारांश :

भारतीय संस्कृति के सनातन मूल्य अद्वितीय हैं जो मानव जीवन को उत्कृष्ट गुणों की समावेशिता से समरस एवं सरस मानव का निर्माण करता है सम्यक, समग्र, एवं श्रेष्ठतम संभावितताओं के विकास हेतु वर्तमान एकीकृत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का ध्येय है आनंदयी “शिक्षा द्वारा समता समानता सर्वहित पहुंच एवं आधुनिक माध्यमों के पांचल में शिक्षा जीवन पर्यंत शिक्षा हेतु प्रायोजित है जिसमें एक राष्ट्रीय चरित्र एवं मानवता को अनुसरण किया जा सके जिसका स्पष्ट प्रभाव 2045 ई तक प्रासंगिक है”<sup>1</sup>, तार्किक विवेचन के स्थान पर नैतिक कताआधारित आध्यात्मिक एवं आर्थिकोत्थान तथा एक जागरूक चैतन्य युक्त सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा की उच्चशिक्षा तक शिक्षा नीति का अन्यनित्यम लक्ष्य शिक्षा मानव जीवन की लघुता बौद्धिक संपदा अधिकार के जीवनपर्यंत शिक्षा वह निवेश है, जिसमें निहित कलात्मक कार्य वैज्ञानिक साहित्यिक नैतिक व भौतिक हितों की सुरक्षार्थ विशेषाधिकृत अनुज्ञप्ति है जो नवचिन्तन एवं प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप व समीक्षा हेतु पांचाल का निर्माण करता है एक भाषा एक से अत्यधिक शिक्षा के रूप में शैक्षिक क्रांति कुशल संगठन ने हिंदी संस्कृत भाषा द्वारा वैदिक संस्कृति को अशोधित पुनर्स्थापन करते हुए वैश्विक शिक्षा के एकीकरण एवं ज्ञान परंपरा के वैश्वीकरण में प्रधान व गौरवपूर्ण है, अवगुणहीन मानव के ज्ञान को धारण के योग्य प्राणेश मेधाशक्ति, कार्यानुसार सिद्धयोग जन्य दिव्य प्रज्ञा सर्वोच्च शुभाअमृत प्राकृतिक समन्वय ही वह वेदज्ञान का अमृत है, जो कोविद-19 के काल में साधुवाद रूपी शैक्षिक निवेश है, शिक्षा एक सफल आकलन की वैज्ञानिक तैयारी है जिसके हेतु वर्तमान में भारतीय मंच विश्व के छात्रों को अनुसंधान तथा अकादमी में निर्देशित सूची के अनुसार आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में विगत 20 वर्षों से 1200 से अधिक संस्थानों में सैकड़ों पाठ्यक्रम को स्वीकृति प्रदान की गई है, 2अ, उच्च शिक्षा में सन 2022 में नव प्रवर्तकों में महिला भागीदारी मात्रा 16.5% है जो धीमी प्रगति का सूचक है, 2023 ई० का विषय ‘विमेन एवं एक्सीलरेटिंग इनोवेशन एवं क्रिएटिविटी’ है/ आत्मनिर्भर भारत की वरीयता में ‘क्रिएटिव इंडिया इन्नोवेटिव इंडिया’ हेतु लक्षित सरकारी नीतियों का उत्तरदाई निकाय के रूप में “अन्तः अस्ति प्रारम्भः”<sup>3</sup>, एक नवगतिविधिक कार्यक्रमों का उल्लेख करता है तृतीय नवीन शिक्षा नीति में भारतीय अनुवादक एवं व्याख्या संस्थान की स्थापना प्राथमिक है संस्कृत भाषा को मुख्य धारा में लाने हेतु प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग एवं बहुभाषी अध्ययन को प्रोत्साहित करता है नवोनमेपी शिक्षण विविध कौशलों को 21वीं सदी में समावेशी, न्यायसंगत उच्च गुणपरक एवं जीविकोपार्जन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास है।

**प्रमुख शब्द-** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, वेद, बौद्धिक संपदा अधिकार, समावेशी, प्रौद्योगिकी.

पृष्ठभूमि शिक्षा को वैश्विक सरोकारों को प्राकृतिक स्वाभाविक आनंददायी क्रिया के समीप लाना भारतीय शिक्षा की वैज्ञानिक गुणता है, शक्ति अनुभूत वैदिक उपासना युक्त गुरुकुल पद्धति ने बौद्धकालीन लोकतंत्र एवं इस्लाम के व्यावहारिक शिक्षा दर्शन ने प्राच्य निस्यन्दन वर्ण व्यवस्था के निस्यन्दन सिद्धांत को मैकाले ने स्वहितार्थ प्रयोग किया भौतिकी अभौतिकी के मध्य सामंजस्यता आदि गुरु शंकराचार्य से भिन्न भारतीय लूथरा स्वामी दयानंद सरस्वती के सम्यक दर्शन में सत्गुण सूत्रों की पूर्ण अभिक्षमता के विकास का

समग्रता विश्व दर्शन शिक्षा को अभिप्रेत करता है वही स्वामी विवेकानंद जी ने परम तत्व को अज्ञेय माना विश्व गुरु भारत एवं नवाचारी केंद्र एशिया महत्वाकांक्षी भारत के विकसित रूप का प्रांचल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निश्चित किया है, जो “सन 2047 ई तक वैदिक संपदा अधिकार में निहित अभीष्ट गुणवत्तापरक शैक्षिक वातावरण कुशल व अभिनव विचारों हेतु शिक्षा को प्रक्रिया एवं उत्पाद परिणाम की कोटि की दक्षता का नियामक है,”<sup>2ब</sup>, समाज में व्याप्त बुराइयों पाखंड और अंधविश्वास के विरुद्ध मानव की शैक्षिक जागरूकता

अनिवार्य है। इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी की शैक्षिक उच्च उपलब्धियों को भाषा के विशुद्ध अस्तित्व से बौद्धिक मूल्यपरक व सोच व्याकरण यह गणित यथा विज्ञान की यंत्र की के विविध अनुप्रयोगों द्वारा विशुद्ध ज्ञान के आनंद को प्राप्त किया जा सकेगा आत्मज्ञानरूपी शिक्षा का उच्च मानव लक्ष्य मानक निर्माण रहा है स्वतंत्र भारत में वी०वी० आयोग से होता हुआ 1961 में समवर्ती विषय के रूप में डॉक्टर संपूर्णानंद समिति ने राष्ट्रीय एकीकृत व सांकेतिक विकास शिक्षा 1948 में राष्ट्रभाषा हिंदी विवादित रही संस्कृत भाषा के शिक्षक को प्रोत्साहन “1986 में राजीव गांधी के सामाजिक एकीकरण”<sup>4</sup>, एवं तृतीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के भूमंडलीकरण को वरीयता देता है।

#### प्रस्तावना:

भारतीय उच्च शिक्षा में नैतिक दिशा निर्देशों में ईमानदारी निष्ठा निष्पक्षता मानव प्रतिभामित्व सम्मान गरिमा एवं कल्याण की रक्षा के अधिकारों का मानव विज्ञान शिक्षा का धारा तलीकरण की सर्वमान्यता राष्ट्रीय शिक्षा नीति के गुणवत्ता विशेष है, शिक्षा के सृजन में विश्वास को अक्षुण्ण रखने पर ही वैश्विक अधिष्ठान में प्रतिनिधित्व संभव है, सन 2015 में गरीबी पर्यावरण संबंधी क्षमता समानता न्याय शक्ति को सुनिश्चित करने अखंड शिक्षा व्यवस्था की सर्वोच्च गुणता की प्राप्ति में उत्कृष्ट शोधयामा का सुप्रमाणिक सुपरिणाम ही भारत को सिद्ध गुरु करेगा एक स्वस्थ प्रतियोगिता सफल उपलब्धि बंधुता साहिदुता सर्वहित शिक्षा संदर्भ में संभव होगी।

सन “1856 एक्ट IV में संशोधन 1859 में हुआ तदनुसार 1967 में WIPO द्वारा कलात्मक साहित्यिक औद्योगिकी संबंधी सामान्य जागरूकता एवं समाज पर अनुच्छेद 27 में अभिनव कार्य मानवाधिकारों की अंतर्निहित घोषणा रही”,<sup>5</sup>, सकल घरेलू उत्पाद का अनुसंधानों एवं विकास परिषद 2020 में मंत्र 0.7% तक व्यय न्यून रहा है जबकि महिला सहभागिता 50% अनुसंधान हेतु लक्षित है, बौद्धिक संपदा में समग्र विकास एवं स्थिरता आवश्यक है, सन “2040 ई तक पारंपरिक ज्ञान के समृद्ध स्रोत की रक्षा करने हेतु डिजिटल पुस्तकालय के प्रति बहुराष्ट्रीय कंपनियों का

विरोध भी है”,<sup>6</sup>, यद्यपि विदेशी मुद्रा प्रवाह बढ़ेगा सर्वोत्तम शिक्षा की प्रथाओं विशेषज्ञों का सजा एवं अंतरराष्ट्रीय प्रयास संस्तुप्य है, यूनेस्को की धरोहर में प्रख्यात सांस्कृतिक सेतु की कार्य नीति शैक्षणिक नैतिकता प्रभावित होगी उच्च ज्ञान का वैश्विक रूपांतरण को अलग अर्थ ज्ञान यथा वास्तु ज्ञान को परिवर्तित कर सकता है, पाणिनी एवं पतंजलि ने संस्कृत भाषा को सनातनी के रूप में दर्शन विशिष्ट चिंतन प्रथमता बनकी एवं अग्रिम सूक्ष्म चिंतन एवं दिव्यदूरदर्शी प्रभाव समाहित है, सब दो चरण में रहस्यवाद की सुरक्षा एवं ध्वनि शुद्धता में अर्थ समझ की सुरक्षा है, बहु भाषा में अनुशासन में शब्दों के भौतिक अक्षर का अर्थ ज्ञान संभव है, परंतु समझ एवं दिव्या भूलता की समझ एक भाग संस्कृत एवं हिंदी भाषा का माध्यम ही सर्वोत्तम है, भाषा की अभियंत्रिक विज्ञान विद्वान पाणिनि ने स्वर्ण ध्वनि अक्षर आदि के उत्पादन एवं वर्गीकरण किया है त्रिमूर्ति पाणिनि का बयान व पतंजलि ने रूपक अलंकारों का प्रयोग शब्द स्थान कल एवं परिस्थिति अनुसार सूचना का संचार ही ज्ञान है, शास्त्रीय संस्कृत समझ के परे क्षेत्रीय इंडेक्स शुद्ध भाषा है, वैदिक संस्कृति आर्य भाषा है, जो 90 तक रूप में उच्च शिक्षा के समांतर सत्य निष्ठा के साथ भारत को विश्व गुरु प्रास्थिति की संभाव्यता है।

मेधावी हेतु गहन मेरिट के आधार पर कार्यक्रम ऑनलाइन दूरस्थ शिक्षा ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों एवं अनुभावात्मक प्रकृतियों का व्यवसायिक शिक्षा प्रशिक्षण व मेंटरिंग बहुमुखी कल्याण आदि शैक्षणिक प्रक्रियाओं में उच्च नैतिकता वांछनीय है, राष्ट्र की अखंडता एक राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण शिक्षा का शृंगलीय पहुंच दक्ष कौशल में संवर्धन श्रेणीबद्ध रचनात्मकता की पारदर्शी प्रणाली का सन 2040 तक अभी कल्पना है, प्रत्येक जिले में 2035 तक प्रवेश नामांकन का अनुपात 7% एकेडमिक शिक्षा का विकास नैतिकता सात निष्ठा के साथ पूर्ण विकास अचित पूर्ण है, सर्वश्रेष्ठ ढंगों की कार्य नीति का जवाब देही का नियमन व निधियां शैक्षणिक नैतिकता पर ही निर्भर है।

**आवश्यकता औचित्य:-** दृश्यते अन्येन, आत्मा इतिदर्शनम अर्थज्ञान प्रासंगिक है, उच्च शैक्षणिक

वैज्ञानिक तैयारी एवं बहुआयामी अनुशासन के संदर्भ में आध्यात्मिक संस्कृति के आवरण में पूर्ण मानव का विकास किस प्रकार संभव है, कि निम्न प्रमुख विचारों को प्राप्त किया जा सके।

- सत्य एवं एक तत्व का संरक्षण अर्थात् एकैवेद द्वियोमंदित
- वैदिक वाले कीवैदिक व अलौकिक संस्कृत भाषा की पांडुलिपि का संरक्षण एवं अर्ध ज्ञान समझ का उच्च शैक्षणिक कार्यक्रमों में अनुप्रयोग
- नैदानिक एवं विश्लेषणात्मक तंत्र उच्च शिक्षा में
- रोजगार के अवसरों में पारदर्शी व्यवस्था में योग्यता का चयन
- शिक्षा में अनुसंधान एवं नवरी विवाह व्यवसायिकता हेतु शैक्षणिक साझेदारी का विकास
- “विजन दस्तावेज 2016 का बहुभाषी हस्तांतरण”<sup>7</sup>,
- शांति स्थापना विश्व स्तर पर
- उच्च शिक्षा का आदर्श व संजीव प्रतीक समाज की मुख्य धारा में प्रवेश
- उच्च शिक्षा में मातृभाषा से विदेशी भाषा की समावेशिका
- विश्व हेतु एक सांकेतिक भाषा का विकास अर्थात् उपकरणों का विकास संभव करना
- वैकल्पिक पाठ्यक्रम में लचीलापन एवं the language of india project, त्रिभाषा एवं संस्कृति ज्ञान प्रणाली की आवश्यकता है।

अस्तु सत्य ही एक बौद्धिक वह ज्ञान है जो अविभाज्य है संपूर्ण विश्व हेतु यथावस्तु ज्ञान का अनुप्रयोग ही लाभकारी है क्योंकि उच्च ज्ञान का समायोजन उच्च शिक्षा में है मानवजाति हेतु न्यायकारी है।

**शोध के उद्देश्य:-** भारत में उच्च शैक्षणिक सत्य निष्ठा एवं नैतिकता विश्व शांति का मापन है योग्यता का निर्माण शिव अवसर पात्रता को आत्म संतुष्टि प्रदान करना शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है, “सत्यमेव जयते uku're सत्येन पन्था विततो देवयानः<sup>8</sup>, अर्थात् विजित सत्य सदेव विस्तृत परिधि हुआ करता है 'सर्वे शान्तिर्भावन्तु'<sup>9</sup>,

- विश्व की शिक्षा शिक्षा के भारतीयकरण से संभव करना

- वैश्विक स्वास्थ्य शैक्षिक सफल उपलब्धि को प्राप्त करना।
- शैक्षिक प्रौद्योगिकीकरण का साझाकरण।
- अनुभव एवं अनुभाविक पाठ्यक्रम का निर्माण करना शिक्षा तंत्र को न्यायकारी व गन वर्धन शोध कार्यो का विकास करना।
- रोजगार परक एवं वास्तविक संपदा को सुदृढ करना।
- शिक्षा के नैतिक मूल्यों से मानव जीवन में उत्कृष्ट का समावेशन करना।
- एक भाषा अभियंत्र की विदेशी भाषाओं के पठन लेखन एवं उपकरणों के विज्ञान से शिक्षा को साझा करना।
- वैश्विक शिक्षा की संस्कृति की समझ विकास करना।
- डिजिटल दक्ष कौशल हेतु समर्पित इकाई की स्थापना करना।

शिक्षा का भारतीयकरण सनातन ज्ञान परंपरा का उच्च राष्ट्रीय हस्तांतरण है जो समाज से राष्ट्र एवं राष्ट्र से विश्व स्तर का स्थानांतरण को संभव कर सकेगा एवं शिक्षा के एक समीकरण को अन्यान्य बहुआयामी स्रोतों से शिक्षा व शैक्षणिक परियोजनाओं को दक्ष कौशल प्रदान करेगा शिक्षा विश्व की साझा संस्कृति के सरोकार की पूर्ति सफल होगी।

**शोध विधि:-** शिक्षा के औषधीय गुणों के संप्रति हेतु गुणात्मक शोध में मानव मूल्य एवं चिंतन पर शोध हेतु भाव पक्ष के सार तत्वों की मौलिकता सही सटीक अर्ध ज्ञान सहित संबंधों एवं दूरस्थ प्रभाव का आकलन विषय वस्तु के अंतर्वस्तु का विश्लेषण शोध प्रश्न अथवा परिकल्पनाओं की सटीक जांच के निर्माता शोध प्रविधि में गहन प्रवेक्षण विधि के साथ प्रवर्तक संतुलन की दार्शनिक अन्यान्य विधियों का प्रयोग आवश्यक है।

- ऐतिहासिक विधि
- विषय वस्तु विश्लेषण विधि
- समीक्षात्मक विश्लेषण
- घटना विज्ञान विधि
- सत्यापन वार्ड सामान्य भाषा दर्शन की विधि
- अंतरज्ञान व विचार प्रयोग की विधि
- प्रवर्तन संतुलन की विधि
- ट्रांस डेंटल विधि

### ● प्रयोगिक दर्शन विधि

गुणात्मक शोध विषय के संदर्भ में प्रधान विधियों के अतिरिक्त आगमन निगमन प्रश्न विधि सर्वेक्षण आदि के माध्यम से संग्रहित सामग्रियों के गहन अवलोकन से प्राप्त तथ्यों के औचित्य अभ्यास की सफलता में ही गुणात्मक शिक्षा गुणात्मक शोध सिद्ध होता है।

**खोज:-** आपरिवर्त्य शिक्षा के मूल तथा मूलपरक विश्व संस्कृत में सार्वभौम शिक्षा का पोषण संभव है राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विश्व शिक्षा की नीति के संदर्भ विशिष्ट में समग्र सर्वांगीण बहुआयामी बहुअनुशासन शिक्षा में उच्च शैक्षणिक शिक्षा तंत्र में मतैक्य के दर्शन में मानवतावाद का विशुद्ध जागरण शिक्षा की सत्य निष्ठा एवं नैतिकता का मूल मंत्र है शिक्षा तंत्र में विशुद्ध गुणवत्ता सामान्य जागरूकता शिक्षा में उत्कृष्ट मूल्य का शैक्षिक तकनीकी एवं शिक्षा में मानव मूल्यों का समावेश ही मानवों को सभ्य बन सकता है।

**खोज:-** शिक्षा के मतैक्य दर्शन के प्रभाव में उच्च शिक्षा का सामान्य कारण क्षमता एवं सामान्य सभी शिक्षा जनहित है वेदों या पुराणों की सत्यता एवं शिक्षा के शाश्वत मूल्य में शब्दों एवं अर्धज्ञान के परस्परिक संबंधों में परिवर्तन अवधारणाओं की व्याख्याभारतीय उच्च शिक्षा में आत्म विचारों का कर्मों में परिणिति विश्वसनीय एवं वैद्य तब रही जाती है जब विविध देशकालिक स्थितियों में एक समान परिणाम प्राप्त हो जो विविध पक्षी अनुप्रयोग को संभावित एवं संभावनाओं के अनंत द्वारा खोलें मनुष्य के मानवता एवं शांति मूल्य पर शिक्षा एवं शिक्षा के मूल्यों को ही प्रोत्साहित कर पाएगा

वर्तमान समाज की उच्च शिक्षा के सापेक्ष नवरी संस्कृति अंतराल के उच्च शैक्षणिक मुख्य धारा हेतु “आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 ईस्वी में जीडीपी का अनुसंधानों एवं विकास पर सन 2020 में मात्र 0.7% पर न्यू रहा यद्यपि महिला सहभागिता 50% अनुसंधान के हेतु लक्षण है तो सन 2040 तक संभव लक्ष्य है”<sup>10</sup> अ एक सुदृण बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था का गठन विविध राज्यों के महाधिवक्ताओं भारतीय विधि फॉर्म एवं नौकरशाही के साथ व्यापक परामर्शोपान्त महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के स्तर पर कार्यरत

शैक्षिक तथा अनुसंधान संस्थानों की ओर से समेकित प्रयास करने को सुझावित करता है, “WHO भाग के रूप में TRIPS TRADES RELETED ASPOSLE OF UNITELLEANCE PROPENTY RIGHT एक ऐसा बाध्यकारी बिंदु है जो प्रत्याभूति प्रक्रिया को रक्षा एवं उत्पाद के विषय में बात करता है”<sup>10</sup> जो मूल नियंत्रक अनुदाग की समाप्ति अथवा बौद्धिक संपदा अधिकार के मध्य संतुलन संघर्षशील है जिसकी सफल क्रियान्विति हेतु क्षमताओं का महत्व उच्च शिक्षा में “विदेशियों का शिक्षा में प्रत्यक्ष निवेश पर्यावरण संरक्षण जैव विविधता कन्वेंशन”<sup>11</sup> CBD उच्च शैक्षणिक सत्य निष्ठा एवं शिक्षा के मूल्य में नैतिकता के संबंधों का निर्माता है भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद CBD के अंतर्गत वैज्ञानिकों के मध्य साक्षरता एक तार्किक कदम है जो अनुकूल नियामक वातावरण का विकास करता है।

भारत के निर्माण और आत्मनिर्भरता की वैश्विक रैंकिंग में भारत का 43 वां स्थान है मेक इन इंडिया स्टार्टअप एवं डिजिटलाइजेशन के स्वतंत्रता एवं पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण भारत में उच्च शिक्षा की वास्तविक निर्णय की प्रक्रिया में प्रभावी शैक्षणिक गारंटी रन प्रस्ताव की सहभागिता एक विवरण योग्य वित्तीय मूल्य पर ज्ञान निवेशों संपत्ति के रूप में शिक्षा में सत्य निष्ठा एवं शैक्षिक संपत्ति की विश्वसनीयता साहित्यिक ज्ञान व कला की चोरी पर बाध्यकारिता शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यापारिक कोटी के निर्धारण में सुधार तथा सहायक है संस्थागत रूप में एक जागरूक पीढ़ी के निर्माण में शिक्षा की नैतिकता एवं मूल या आवश्यक है ज्ञान का मुक्त प्रभाव एवं खुला ज्ञान शिक्षा विशिष्ट सरकारी वित्त परिकल्पनाओं है यद्यपि लोकतंत्र में उच्च शिक्षा में सत्य निष्ठा एवं नैतिकता की बेहतर क्रिया विनती के हेतु हृदय एवं मस्तिष्क के संयुक्त को ही अभिनव प्रयोग कहा जा सकेगा।

“शब्दकोष के व्यापक प्रचार अभियंता पाणिनि”<sup>12</sup>, रहे उच्च ज्ञान का नपुं मानदंड एवं विकास के हेतु 2030 ई तक सांकेतिक संस्था को बढ़ाना राष्ट्रीय विद्युतीय कोष अंतरण द्वारा प्रौद्योगिकी पर आधारित अनुसंधानों कृत्रिम बुद्धिमत्ता एकेडमी अनुसंधान हेतु प्रतिभा के एक विशाल सेतु का निर्माण सर्वश्रेष्ठ टाटी ए तरीकों की

नीति में जवाब दे ही एकमात्र सत्य वह नैतिकता की मान्यता है।

**प्राप्तियाँ:-** उच्च शिक्षा सामाजिक संदर्भ में तथा ज्ञान शिक्षा में शैक्षणिक सत्य निष्ठा का अर्थज्ञान ईमानदारी निष्पक्षता सम्मान एवं उत्तरदायित्व आदि के मूल्यों को अनुपालन करते हुए शिक्षा की संप्रति अधिगम सीखना अन्योन का उचित श्रेय देने से है।

**“त्वमेग्रे अदितिदेव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा त्वमिलोशतहिंसिदक्षते तवं वृत्रहा वसुपते सरस्वती”** <sup>13</sup> अर्थात् अच्छी विद्या पढ़ाने वाला शास्त्र का परंपरागत विद्वान जन माता के समान पालन करता है सभी विकारों से रहित विषयों के उत्तम गुण को देता है विद्या एवं विश्वसनीय वातावरण के निर्माण एवं चिंतन कर्म से है कठिनतम परिस्थितियों में भी सही को करने से अभिप्राय से है।

- शैक्षणिक निष्ठा का अर्थ ज्ञान अनुपयुक्त ज्ञान के स्रोतों की वैधता से है।
- “स्वधर्मं निधनम श्रेयः पर धर्मो भयावहः” <sup>14</sup>, अर्थात् स्वधर्म में मृत्यु भी निःश्रेयस है, अन्योन का कर्म करना भयावह स्थिति उत्पन्न करता है,
- औचित्यपूर्ण आचरण
- शोध नियमों का अक्षत्ता अनुपालन
- सूचना का भौतिक संपदा अधिकार अनुसार प्रयोग
- शोध में संप्रदाय तत्वों का यथावत प्रस्तुतीकरण
- सही गलत का कर्म कारक के संदर्भ में विभक्त करना

**कार्यान्वयन:-**

- साहित्यिक चोरी
- पुनःचक्रीय कार्य का पुनः उपयोग
- किंवदन्तियों को सत्य की मान्यता का आग्रह
- मनमाना पूर्वाग्रही होना
- प्रवेक्षण में अनैतिकता
- प्रतिरोपण या हृदय में धारण करना अर्थात् अन्योन के
- कर्मों को अपना नाम देना

**परिणाम:-**

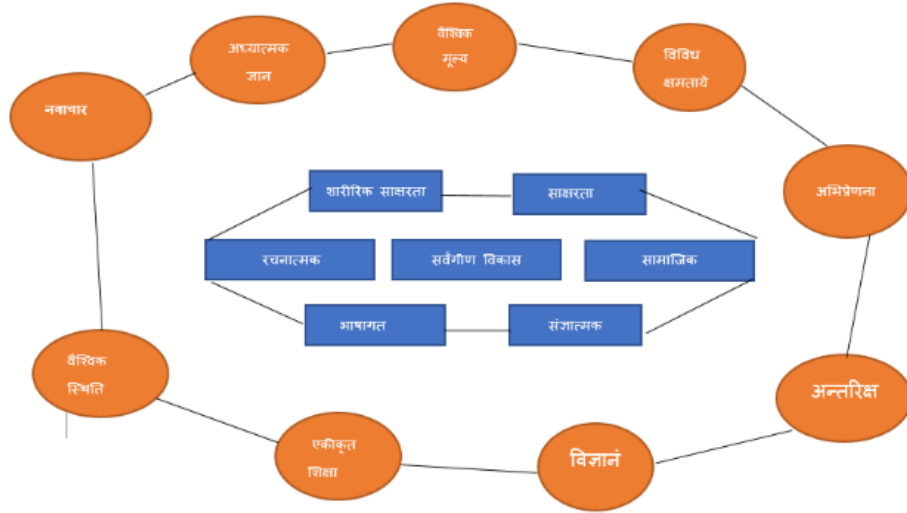
- मानव के पूर्ण जीवन के निमित्त ललित कलाओं व सांसारिक गुण का विकास मूल्य परख शिक्षा की संस्कृति को विश्व की सार्वभौमिकता का पोषण संभव है।

- अमेरिकी व्यापारिक परिधि में भारत वरीयता के नियंत्रण में है।
- एक विपणन योग्य वित्तीय मूल्य परक ज्ञान निवेश शिक्षा संपत्ति के रूप में है।
- शिक्षा में लोकतांत्रिक एक दृष्टि दस्तावेज वीडियो एवं एजेंसी के मध्य संतुलनकारी
- वैश्विक नव प्रवर्तन सूचकांक GII में भारत 2015 में 21वां स्थान से बढ़कर 2020 में 48वे में स्थान पर पहुंचा।
- संस्थागत और संरक्षण की शुद्धता समृद्धि कारण तथा प्रौद्योगिकीकृत करना संभव
- छात्राओं शोधार्थियों की नवाचारी क्षमताओं को बढ़ाने में सहायक जो WIPO के वैश्विक विश्व बौद्धिक संपदा संगठन के समायोजन में स्थापित किए गए
- अनेक विदेशी ज्ञान का आधार संस्कृत है।
- “NIPAM में राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा जागरूकता मिशन में 15 अगस्त 2022 के पूर्व एक मिलियन छात्रों को लगभग बुनियादी प्रशिक्षण दिया गया जिसमें अस्तर ए 9 से 12वीं एवं स्तर ब में विविध महाविद्यालय एवं विश्व स्तर में विभाग हैं।” <sup>16</sup>
- “राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सांकेतिक भाषाओं के हेतु” <sup>17</sup> राज्य स्तरीय पाठ्यचर्या सामग्री का विकास भाषाओं में संस्कृत की पुनः स्थापना सौदान तक पहुंच संभव होना सुनिश्चित हो पाएगा,
- संस्कृत के संदर्भ में शाश्वत मूल्य मानव के मन एवं आत्म विचार कर्मयोगी होने की प्रचेता वैदिक व पौराणिक है उनकी रचनात्मक परिवर्तन विविध पक्षी आयामी व उच्च शैक्षिक अनुसंधान में निहित है जिनका समागम उच्च शिक्षा का महाकुंभ है।
- भारतीय अध्ययन का विदेशी आकर्षण मनोवैज्ञानिक धाम दर्शन उत्कृष्ट रूप में नैतिकता एवं सतनिष्ठा का ही वरदान जिसके विज्ञान ने परम शांति चेतना के इकट्ठे के ज्ञानात्मक जागृत मानवतावाद के विस्तार की संभावित है
- संस्कृत सामूहिकता के भाव की समझ संभव है।
- महत्व:- विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा के एकीकरण की अवधारणा की नवीन परिभाषा का निर्धारण एवं अनुप्रयोग आवश्यक है 2046 तक सर्वोच्च गुणवत्ता

शिक्षा में बहुविषयक बहुभाषिकता जाकर आकर्षण से सम्बद्धता समृद्ध एवं पूर्ण संभावनाओं की अंतिम संभावितताओं तक उत्कृष्ट शोध सतनिष्ठा एवं नैतिकता पूर्ण अभिकल्पना में है।

संगच्छदवं, सं वदध्व सं वो मनांसि जानतम्,  
देवा मांग यथा पूर्वे संजानाना उपासते,  
समानं मन्त्र समितिः समानं मनः स चित्तमेषाम्<sup>18</sup>

### उच्च शैक्षणिक पूर्णता की अंतिम संभावितताएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020



शिक्षा द्वारा एक साथ संचालन वचन मनो वैचारिक गुणात्मक आचरण एक संगठन स्थित चित्त द्वारा ही सभी प्रकार की योग्यता दक्षता कौशल एवं परिणामों को प्राप्त किया जा सकेगा संपूर्ण विश्व को एक शिक्षित नागरिक विदेशी क्रेडिट शिक्षा में 2030 तक सघन लेखन में क्रेडिट मान्य है जिसके उच्च शिक्षा पर भी निधित्व भूमिका में हो।

- शिक्षा हेतु स्वतंत्र वातावरण का निर्माण।
- पूर्ण मानव का विकास।
- विश्व स्तर पर स्वस्थ प्रतियोगिता एवं गुणात्मक में वृद्धि की संभावित।
- सफल उपलब्धियों के समानांतर समाजशास्त्र सहयोग बंधुत्व का बोध होना।
- उच्च शैक्षणिक प्रमाणिक नवाचारी संग्रहणीय प्रौद्योगिकी का ज्ञानात्मक विकास।
- संभवमनोविचारिक संस्कृति का मूर्त रूप का अध्ययन।
- सुदृढ़ नवाचारों का परिणाम मुकदमों का नया होना।

- उच्च शिक्षा संस्थान को बहु, अनुशासन की दिशा में संस्कृत को एक अनिवार्य विषय के रूप में चयनित करना महत्वपूर्ण है।

“अशब्दरूपम्”<sup>19</sup> विश्व शिक्षा नीति की सांकेतिक भाषा अभ्यास द्वारा प्रमाणित एवं प्रशिक्षण का उपनिषद सार्थक तो निर्गुण है के समीप पाणिनि एवं पतंजलि दोनों हैं जिनका चिंतन सामान्य वानरी एवं दूरदर्शी चिंतन परंपरा व सूचनाता में निहित है भाषा अभियांत्रिकी की मानव मस्तिष्क का अत्यंत उपयोगी अविष्कार है,<sup>20</sup> त्रिभाषा सूत्र मंत्र सेमी भाषा अंग्रेजी एवं आधुनिक भाषा का उपयोग वैश्विक शिक्षा के एकीकरण एवं ज्ञान परंपरा के वैश्वीकरण में प्रधानता गुरुत्वपूर्ण है।

**शोध सारांश:-** मानव शिक्षा एक संस्कार के रूप में शिक्षा के मूल्य अद्वितीय है अस्तु अनुशासनात्मक संस्कृति मनोविकार से रहित सत्य निष्ठा एवं नैतिकता से अनुपालित है शिक्षा के चैतन्य दर्शन में भेदरहित सामूहिक शिक्षा उच्च शैक्षणिक मानवीय मूल्यों की त्रैकालिक दृष्टि द्वारा सर्वोपयोगी विश्व दर्शन सर्व जनहित का

साधुवाद है जिसका धरातलीकरण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 है संस्कृत भाषा शब्द वास्तु दिशा क्रिया तथा मूल स्वभाव को व्यक्त करता है लेखन व अक्षर ऋग्वेदोलिखित शुद्धतम है जो विविध दर्शन एवं अर्थ ज्ञान में है उच्च शैक्षणिक प्रणालियों में समावेशी न्याय संगत उच्च गुणवत्ता एवं जीव का परिजन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति को संभव कर पाएगा

**“त्वे इंद्राः/सभ्रम विप्राथिये वानम ऋत्याः सपन्तः**

**अवस्थावो धीमहि प्रशास्ति सप्तघस्ते शर्यो दवेदावाने स्थाम,<sup>21</sup>**

अर्थात्, मानव को चाहिए की शिक्षा में सत्य विज्ञान युक्ति बुद्धि से औषधि विद्या को जानकर जीवन कौशल के अनुप्रयोगों से धन संचय में समझना की योग्यता को प्राप्त करें भावी समस्त स्रोत पर प्रति 05 वर्षों में राष्ट्रीय पाठ चर्चा रूपरेखा सामान आकलन प्रणाली परिवर्तन होगा 2030 तक मेधावी हेतु गहन मेरिट पर विविध कार्यक्रमों एवं अनुभवात्मक नीतियों का सामंजस्य होना है अंतर्राष्ट्रीयराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा विधियों में 2025 तक स्वायत्त शिक्षा के रूप में योजनाबद्ध पारदर्शी उच्चतर पर कार्य संस्कृति एक नवीन पहलू संचालित होगी।

**निष्कर्ष:-** उच्च शैक्षणिक स्तर पर भावी सफल एवं संभावनाओं के हेतु वैध्य परिस्थितितंत्र डिजिटल पारदर्शी नवोन्मेषी शिक्षा एक समकालीन शिक्षण पद्धति को संदर्भित करता है जो विश्वविद्यालय छात्रों में रचनात्मक आलोचनात्मक सोच और कौशल को प्रोत्साहित करता है, “यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो कोई निरक्षर ही ना रहे”<sup>22</sup> उच्च शिक्षा एवं शैक्षणिक प्रणालियों में सत्य निष्ठा एवं नैतिकता का पर्याय सचैतान्य सांसारिक अनुशासन एवं मूल्यपरक नीति की शिक्षा प्रदान करता है उच्च शिक्षा के माध्यमों में शैक्षणिक कल्याण बहुमुखी रूप में सचेत व्यवसायिक व्यवसायिकता राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण अखंड व शृंखलीय पहुंच कौशल में बुद्धि का लक्ष्य 2040 तक भारत की तृतीय राष्ट्रीय नीति का है।

- शैक्षिक सॉफ्टवेयर के द्वारा संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का रूपांतरण।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा सत्य निष्ठा रूप में न्यून लागत।

- एकेडमिक अनुसंधान हेतु एक विशाल सेतु का निर्माण।
- अन्य एजेंसी के साथ शिक्षा को संबंध करते हुए सर्वश्रेष्ठ तरीकों की नीति का क्रियान्वन उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करता है।
- शब्दकोश का व्यापक प्रसार संभव।
- प्रौद्योगिकी आधारित अनुसंधान एवं नवाचारों हेतु नवीन दशाओं को स्पष्ट (NEFT) करता है।

भारतीय संस्कृति के सनातन मूल्य अद्वितीय है जो मानव जीवन को उत्कृष्ट गुणों की समावेशिता से समरस एवं सरस मानव का निर्माण करता है सम्यक, समग्र, एवं श्रेष्ठतम संभावितताओं के विकास हेतु वर्तमान एकीकृत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का ध्येय है आनंदयी “शिक्षा द्वारा समता समानता सर्वहित पहुंच एवं आधुनिक माध्यमों के पांचल में शिक्षा जीवन पर्यंत शिक्षा हेतु प्रायोजित है जिसमें एक राष्ट्रीय चरित्र एवं मानवता को अनुसरण किया जा सके जिसका स्पष्ट प्रभाव 2045 ई तक प्रासंगिक है”<sup>1</sup>, तार्किक विवेचन के स्थान पर नैतिक कताआधारित आध्यात्मिक एवं आर्थिकोत्थान तथा एक जागरूक चैतन्य युक्त सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा की उच्चशिक्षा तक शिक्षा नीति का अन्यनित्यम लक्ष्य शिक्षा मानव जीवन की लघुता बौद्धिक संपदा अधिकार के जीवनपर्यंत शिक्षा वह निवेश है, जिसमें निहित कलात्मक कार्य वैज्ञानिक साहित्यिक नैतिक व भौतिक हितों की सुरक्षार्थ विशेषाधिकृत अनुज्ञप्ति है जो नवचिन्तन एवं प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप व समीक्षा हेतु पांचाल का निर्माण करता है एक भाषा एक से अत्यधिक शिक्षा के रूप में शैक्षिक क्रांति कुशल संगठन ने हिंदी संस्कृत भाषा द्वारा वैदिक संस्कृति को अशोधित पुनर्स्थापन करते हुए वैश्विक शिक्षा के एकीकरण एवं ज्ञान परंपरा के वैश्वीकरण में प्रधान व गौरवपूर्ण है, अवगुणहीन मानव के ज्ञान को धारण के योग्य प्राण्य मेधाशक्ति, कार्यानुसार सिद्धयोग जन्य दिव्य प्रज्ञा सर्वोच्च शुभाभूत प्राकृतिक समन्वय ही वह वेदज्ञान का अमृत है, जो कोविड-19 के काल में साधुवाद रूपी शैक्षिक निवेश है, शिक्षा एक सफल आकलन की वैज्ञानिक तैयारी है जिसके हेतु वर्तमान में भारतीय मंच विश्व के

छात्रों को अनुसंधान तथा अकादमी में निर्देशित सूची के अनुसार आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में विगत 20 वर्षों से 1200 से अधिक संस्थानों में सैकड़ों पाठ्यक्रम को स्वीकृति प्रदान की गई है, <sup>2अ</sup>, उच्च शिक्षा में सन 2022 में नव प्रवर्तकों में महिला भागीदारी मात्रा 16.5% है जो धीमी प्रगति का सूचक है, 2023 ई० का विषय 'विमेन एवं एक्सीलरेटिंग इनोवेशन एवं क्रिएटिविटी' है/ आत्मनिर्भर भारत की वरीयता में 'क्रिएटिव इंडिया इन्नोवेटिव इंडिया' हेतु लक्षित सरकारी नीतियों का उत्तरदाई निकाय के रूप में "अन्तः अस्ति प्रारम्भः" <sup>3</sup>, एक नवगतिविधिक कार्यक्रमों का उल्लेख करता है तृतीय नवीन शिक्षा नीति में भारतीय अनुवादक एवं व्याख्या संस्थान की स्थापना प्राथमिक है संस्कृत भाषा को मुख्य धारा में लाने हेतु प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग एवं बहुभाषी अध्ययन को प्रोत्साहित करता है नवोनमेषी शिक्षण विविध कौशलों को 21वीं सदी में समावेशी, न्यायसंगत उच्च गुणपरक एवं जीविकोपार्जन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास है।

#### शैक्षिक निहितार्थः

संभावित तृतीय विश्व युद्ध की विभीषिका के रक्षार्थ विश्व शांति की स्थापना में उच्च व्यावसायिक एवं कृषि संबंधी शिक्षा की अलग व्यवस्था संभव है जेंडर सोच पर कार्यनीति सतत विकास को बल प्रदान कर पाएगा मानव पूंजी विकास दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम को लाभ प्राप्त हो सकता है ग्रामीण सांस्कृतिक एवं डिजिटल अंतर की पूर्ति हेतु बौद्धिक संपदा प्रांजल द्वारा न्यूनाविधि में पाठन संभव है वित्तीय अनुदान प्रशिक्षित प्रध्यापकों द्वारा भेड़ रही शिक्षा ही रचनात्मक भारत अभिनव भारत का निर्माणसंभव करता है सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने स्क्रीनाधारित शिक्षा ऑनलाइन मूल्यांकन व परीक्षाएं वैज्ञानिक रूप में शैक्षिक नैतिकता को अनुसरण करता है।

#### संदर्भ ग्रंथ सूची :

शुक्ला वैष्णवी शोधार्थी के शोध शीर्षक "स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक विचारों का प्रभाव" का सारतत्व, पूर्व शोध सामग्री से लिया गया परिणाम।

2<sup>अ,व</sup> IPR सर्वेक्षण 2022-23

गीता कथन

द्वितीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1980

WIPO 1856 Act IV, अनु० 27

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एक मशौदा

2016 विज्ञान दस्तावेज

सत्यानन्द स्वामीकृत श्रीमद दयानंद प्रकाश पृष्ठ सं 29,  
नवशक्ति प्रिंट, दिल्ली, 89वीं वर्ष 1924 –  
2014

हिन्द प्रार्थना शांतिमन्त्र

TRIPS, WHO,

CBD जैव विविधता कन्वेंशन

त्रिपदी, महाभाष्य दीपिका भत्रिहरी

सरस्वती दयानंदकृत 'ऋग्वेद', हिंदी भाष्य, पृष्ठसं 10,  
श्लोक सं 11

श्रीमदभगवत गीता "कर्मयोग", अध्याय 3 श्लोक सं 35,  
श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद

"कार्यन्वयन" ट्रोब यूनिवर्सिटी

"परिभाषा", सिडिनी यूनिवर्सिटी

"जाँच" डावसन पी०, व सदरलैंड – स्मिथ डब्लू  
(2017).

NIPAM राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा जागरूकता मिशन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक मसौदा

ऋग्वेद 'संगठन सूत्र', अंतिम सूक्त, कल्याण मन्त्र.

सरस्वती दयानंदकृत 'सत्यार्थ प्रकाश' पृष्ठ सं 31, प्रथम  
सम्मुल्लास

सर डब्लू डब्लू हंटर एवं प्रोफेसर मोनियर विलियम के  
विचार.

पतंजलि का महाभाष्य, पतंजलि महाभाष्य के

दार्शनिक तत्व होरल्ड जी० कार्ड, के कुंजुननी

राजा Encyclopedia of Indian

philosophers (The philosophy of

grammarians) moti lal banarasi das

publication, P-No 115, Isbn – 8128 –  
04260

मदनमोहन मालवीय जी का कथन